© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

मौर्य काल के धार्मिक दशा पर एक विवेचना

[1]Vandna Kumari, [2]Dr. Firoz Alam
[1]Research Scholar, Department of A.I.& A.S. M.U., Bodh Gaya
[2]Lecturer of A.I.& A.S. , Alam Iqbal College , Bihar Sharif, M.U., Bodh Gaya

सार

वैदिक धर्म और गृह कृत्य प्रधान थे। मेगस्थनीज़ के अनुसार ब्राह्मणों का समाज में प्रधान स्थान था। दार्शनिक यद्यपि संख्या में कम थे किन्तु वे सबसे श्रेष्ठ समझे जाते थे और यज्ञ-कार्य में लगाए जाते थे। कौटिल्य के अनुसार त्रयी (अर्थात् तीन वेदों) के अनुसार आचरण करते हुए संसार सुखी रहेगा और अवसाद को प्राप्त नहीं होगा। तदनुसार राजकुमार के लिए चोलकर्म, उपनयन, गोदान, इत्यादि वैदिक संस्कार निर्दिष्ट किए गए हैं। ऋत्विक, आचार्य और पुरोहित को राज्य से नियत वार्षिक वेतन मिलता था। वैदिक ग्रंथों और कर्मकाण्ड का उल्लेख प्रायः तत्कालीन बौद्ध ग्रंथों में मिलता है। कुछ ब्राह्मणों को जो वेदों में निष्णात थे, वेदों की शिक्षा देते थे तथा बड़े-बड़े यज्ञ करते थे, पालि-ग्रंथों में 'ब्राह्मणनिस्साल' कहा गया है। वे अश्वमेध, वाजपेय इत्यादि यज्ञ करते थे। ऐसे ब्राह्मणों को राज्य से कर-मुक्त भूमि दान में मिलती थी। अर्थशास्त्र में ऐसी भूमि को 'ब्रह्मदेय' कहा गया है और इन यज्ञों की इसलिए निंदा की गई है कि इनमें गौ और बैल का वध होता था, जो कृषि की दृष्टि से उपयोगी थे। किन्तु कर्मकाण्ड प्रधान वैदिक धर्म अभिजात ब्राह्मण तथा क्षत्रियों तक ही सीमित था।

मुख्य शब्द : धार्मिक, कृषि, पुरोहित, मेगस्थनीज़, पवित्रता, इत्यादि।

प्रस्तावना

उपनिषदों का अध्यात्म-जीवन, चिन्तन तथा मनन का आदर् ख़त्म नहीं हुआ था। सुत्त निपात में ऐसे ऋषियों का उल्लेख है जो पंचेन्द्रिय सुख को त्यागकर इद्रियसंयम रखते थे। विद्या और पवित्रता ही इसका धन था। वे भिक्षा में मिलने वाले व्रीहि से यज्ञ करते थे। यूनानी लेखकों ने भी इन वानप्रस्थियों का उल्लेख किया है। इन लेखकों के अनुसार ये वानप्रस्थाश्रम में रहने वाले ब्राह्मण कुटियों में निवास करते थे। वहाँ संयम का जीवन-व्यतीत करते हुए विद्याध्ययन और मनन करते थे। वे अपना समय गहन प्रवचनों को सुनने और विद्या दान में बिताते थे। मेगस्थनीज़ ने मंडनि कौर सिकन्दर के बीच वार्तालाप का जो वृत्तांत दिया है, उससे मौर्यकालीन ब्राह्मण ऋषियों की जीवनचर्या पर प्रकाश पड़ता है।

मौर्य काल के धार्मिक दशा

मौर्य काल में अनेक धर्म एवं सम्प्रदाय प्रचलित थे । इस काल के सम्राटों की धार्मिक विषयों में सहिष्णुता की नीति से विभिन्न मतों एवं सम्प्रदायों के विकास का सुअवसर प्राप्त हुआ । इस समय के मुख्य धर्म एवं सम्प्रदाय वैदिक, बौद्ध, जैन, आजीवक आदि थे ।

इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:

(i) वैदिक अथवा ब्राह्मण धर्म:

समाज के उच्च वर्गों में ब्राह्मण धर्म का बोलबाला था। अनेक वैदिक देवताओं की पूजा होती थी तथा विविध प्रकार के यश किये जाते थे। चन्द्रगुप्त मौर्य प्रारम्भ में ब्राह्मण धर्म का ही अनुयायी था। महावंश के अनुसार बिंदुसार ने साठ हजार ब्राह्मणों के प्रति उदारता दिखाई थी।

अर्थशास्त्र में अपराजित, अप्रतिहित, जयन्त, वैजयन्त, शिव, वैष्णव, अश्विन्, श्रीमादिरा (दुर्गा), अदिति, सरस्वती, सविता, अग्नि, सोम, कृष्ण आदि देवी-देवताओं का उल्लेख मिलता है। पुरोहित यज्ञ कराते थे। यज्ञों के अवसर पर पशुओं की बलि भी दी जाती थी।

अशोक के प्रथम शिलालेख से पता चलता है कि उसके राज्य में सर्वत्र पशु-बलि होती थी जिसे बन्द कराने के लिये उसने आदेश जारी किये थे। अर्थशास्त्र में राजप्रासाद के समीप बनी हुई 'यज्ञशाला' (इज्या-स्थानम्) का उल्लेख मिलता है।

ब्राह्मणों का एक वर्ग सन्यासियों का था। वे जंगलों में रहकर कठोर साधना एवं तपश्चर्या का जीवन व्यतीत करते थे। सन्यासियों को 'श्रमण' कहा जाता था। यूनानी लेखकों ने उनके ज्ञान एवं सदाचरण की बहुत प्रशंसा की है।

मेगस्थनीज के अनुसार मंडनिस नामक एक इसी प्रकार के आश्रमवासी सन्यासी ने अपने ज्ञान से सिकन्दर को बहुत अधिक प्रभावित किया था। उपर्युक्त देवी-देवताओं के अतिरिक्त इस समय अग्नि, नदी, समुद्र, पर्वत, नाग आदि की भी पूजा की जाती थी। लोग तीर्थयात्रा पर जाते थे। ज्योतिषियों, भविष्यवक्ताओं, शकुन-विचारकों आदि का भी समाज में महत्वपूर्ण स्थान था।

(ii) बौद्ध धर्म:

अशोक के शासन-काल में बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ। उसने यह घोषित किया 'जो कुछ बुद्ध ने कहा है वह सत्य है।' अशोक ने इस धर्म के प्रचार में अपने साम्राज्य की सारी शक्ति एवं साधनों को नियोजित कर दिया।

उसके अथक परिश्रम के फलस्वरूप यह धर्म भारत की सीमाओं का अतिक्रमण कर पश्चिमी एशिया तथा लंका तक फैल गया। अशोक के ही समय में पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति हुई जिसकी समाप्ति पर विभिन्न दिशाओं में प्रचारक-मण्डल भेजे गये। परम्परा के अनुसार उसने 84 हजार स्तूपों का निर्माण करवाया था। अशोक के उत्तराधिकारियों में शालिशूक भी बौद्ध मतानुयायी था जिसने उसी के समान धम्मविजय की थी।

(iii) आजीवक तथा निर्ग्रन्थ:

आजीवक सम्प्रदाय की स्थापना मक्खलिगोसाल ने की थी। वे बुद्ध एवं महावीर के समकालीन थे। मौर्य-युग तक आते-आते यह एक प्रबल सम्प्रदाय बन चुका था। अशोक के सातवें स्तम्भ-लेख में आजीवकों का भी उल्लेख किया गया है तथा महामात्रों को आजीवकों के हितों का ध्यान रखने के लिए कहा गया है।

अशोक ने अपने अभिषेक के 12वें वर्ष इस सम्प्रदाय के सन्यासियों के निवास के लिये बराबर पहाड़ी पर दो गुफाओं का निर्माण करवाया था। अशोक के पौत्र दशरथ ने भी नागार्जुनी पहाड़ी पर कुछ गुहा-विहार बनवाये थे। इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेतर दोनों ही वर्गों के सन्यासी सम्मिलित थे।

निर्ग्रन्थ से तात्पर्य जैन धर्म से है । यह भी श्रमणों का ही एक वर्ग था । अशोक के लेखों में निर्ग्रन्थों का उल्लेख हुआ है । मेगस्थनीज ने इन्हें 'नग्न साधु' कहा है । परम्परा के अनुसार इस सम्प्रदाय के महान् आचार्य भद्रबाहु ने चन्द्रगुप्त को जैन मत में दीक्षित किया था ।

अशोक का एक उत्तराधिकारी सम्प्रति, जैन परपरा के अनुसार जैन धर्म का संरक्षक था । इस समय जैन धर्म भारत के पश्चिमी प्रदेशों में फैला था । दिव्यावदान के अनुसार निर्ग्रन्थ लोग अशोक के समय में उत्तरी बंगाल के पुण्ड्रवर्द्धन प्रदेश में भी निवास करते थे । परजु आजीवकों के समान वे लोग मौर्य राजाओं से दान नहीं पा सके ।

भक्ति सम्प्रदाय का उदयः

मौर्ययुगीन भारत के धार्मिक जीवन में भक्ति सम्प्रदाय का उदय हो चुका था । बुद्ध को देवता मानकर उनकी धातुओं एवं प्रतीकों की पूजा की जाने लगी । यूनानी लेखकों ने वासुदेव (कृष्ण) की पूजा का उल्लेख हेराक्लीज नाम से किया है ।

उपसंहार

वैदिक धर्म के अतिरिक्त एक अन्य प्रकार के धार्मिक जीवन का चित्र भी मिलता है जिसकी मुख्य विशेषता विभिन्न देवताओं की पूजा थी। ब्रह्मा, इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर, शिव, कार्तिकेय, संकर्षण, जयंत, अपराजित, इत्यादि देवताओं का उल्लेख है। इनमें से बहुत से देवताओं के मन्दिर थे। स्थानीय तथा कुल देवताओं के मन्दिर भी होते थे। इन देवताओं की पूजा पुष्प तथा सुगन्धित पदार्थों से होती थी। नमस्कार, प्रणतिपात या उपहार से देवताओं को संतुष्ट किया जाता था। इन मन्दिरों में मेले और उत्सव होते थे। यह जन-साधारण का धर्म था। देवताओं की पूजा के साथ भूत- प्रेत तथा राक्षसों के अस्तित्व में उनका विश्वास था। इन्हें अभिचार विद्या में कुशल व्यक्तियों की सहायता से संतुष्ट किया जाता था। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार के जादू-टोनों का भी प्रयोग किया जाता था। अक्षय धन, राजकृपा, लम्बी आयु, शत्रु का नाश आदि उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अनेक अभिचार क्रियाएँ की जाती थीं। चैत्यवृक्षों तथा नागपूजा का प्रचलन जन-साधारण में था। अशोक ने भी अपने नवें शिलालेख में लोगों द्वारा किए जाने वाले मांगलिक कार्यों का उल्लेख किया है। ये मांगलिक कार्य बीमारी के समय, विवाह, पुत्रोत्पत्ति तथा यात्रा के अवसर पर किए जाते थे। अशोक ने अपने शिलालेखों में ब्राह्मणों, निर्ग्रन्थों के साथ-साथ आजीवकों का भी उल्लेख किया है। राज्याभिषेक के 12वें वर्ष में अशोक ने बाराबर की पहाड़ियों में उन्हें दो गुफ़ाएँ प्रदान कीं। सम्पूर्ण मौर्य काल में आजीवकों का प्रभाव बना रहा। अशोक के पौत्र दशरथ ने भी नागार्जुनी की पहाड़ियों में कुछ गुफ़ाएँ आजीवकों को भेंट कीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] कौटिल्य का लोक प्रशासन- देवेन्द्र प्रसाद राम

[2] 2 कौटिल्य का सामाजिक एवं राजनीतिक विचार- डा0 मणिशंकर प्रसाद, पृ0 2

[3] 3 कौटिल्य का लोक प्रकाशन-देवेन्द्र प्रसाद राम, पृ0 32

[4] कौटिल्य का सामाजिक एवं राजनीतिक विचार- डा0 मणिशंकर प्रसाद, पृ0 2

[5] वी.के. सुबरह्मण्यम, मकुंसज्म ऑफ चाणक्य, न्यू दिल्ली, 1985, पृ0 2

[6] कौटिल्य अर्थशास्त्र- अनिल कुमार मिश्र, प्रभात प्रकाशन, पृ0 28

[7] प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति के 0सी0 श्रीवास्तव, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2000-2001।

[8] प्राचीन भारत में दूत पद्धति - आनन्द परकाश गौड़, लोक भारती परकाशन, इलाहाबाद, 2007